

पद ७४

(राग: भूप - ताल: दीपचंदी)

जीव हा कलंक कधीं झडेल झडेल ॥१॥ भेदबुद्धि घालवी हे
दृश्य बंध तोडवी। तें गुरुवाक्य कानीं कधीं पडेल पडेल ॥२॥
मायाकृत संसृति सुख दुःख जन्ममरण। भ्रांति सुमति मिथ्यात्व
कधीं जडेल जडेल ॥३॥ सच्चित्सुख घनानंद एकाकी निस्तरंग।
स्वस्वरूपसंग कधीं घडेल घडेल ॥४॥ बहुत जन्म सुकृत पूर्वपुण्य
फळेल। तरी दृष्टि ज्ञान ज्ञानरूप मार्ताण्ड पडेल पडेल ॥५॥